रात्रिक्लास 7-5-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

रथ और रथी दोनो इकट्ठे ही आते हैं। बच्चों की याद किस तरफ जाती है? पहले रथ पर पीछे रथी पर या पहले रथी पर पीछे रथ पर? (नज़र रथ पर याद रथी की आती है) ठीक है। शिव जयन्ति या शिवरात्रि मनाते हैं। आगे तो नहीं जानते थे शिवरात्रि क्यों मनाते हैं कब आये थे। किस में आये थे यह ख्याल नहीं करते। अभी आकर अपना परिचय दिया है। बच्चे जानते हैं बाबा है और बाबा पढ़ाते हैं। बाप को याद करने से पावन भी बनना है। निश्चय होता है और समझते हैं पावन बन जावेंगे तो यहां नहीं रहेंगे। जीवन मुक्ति देने वाला भी है ऊंच ते ऊंच। तो उनको याद भी करना है। आत्मा जानती है हम ऊंच ते ऊंच बनते जाते हैं याद की यात्रा से। जितना पुरुषार्थ करेंगे सतोप्रधान बनेंगे। और कोई उपाय नहीं। आत्मा को तमोपेधान से सतोप्रधान बनाना है। पतित को तमोप्रधान, पावन को सतोप्रधान कहेंगे। आत्मा भी सतोप्रधान थी तो शरीर भी सतोप्रधान थी। अभी आत्मा भी तमोप्रधान है। आत्मा को ही पापात्मा, पुण्यात्मा कहा जाता है। अच्छे वा बुरे संस्कार आत्मा में रहते है। यह तो बच्चों को पक्का हो गया है। बच्चों को यह भी निश्चय हो गया है यह हमारा बहुत जन्मों का अन्तिम जन्म है। 84 जन्मों को भी मानते हैं। यह भी जानते हैं तो पावन बनने पुरुषार्थ करते हैं उन्हों ने ही 84 जन्म पूरे लिये हैं। 84 फिर से रिपीट होनी है। आत्माको रिपीट करना है। रिपीट करते ही रहते हैं। बच्चे को समझाया गया है 84 जन्म लिये हैं। अभी वापस जाकर रिपीट करना है। तो बच्चों को नई राजधानी भी याद आवेगी। उन्हों की राजधानी जैसे थी वही फिर से स्थापन हो रही है। इसमें जरा भी फर्क नहीं रहेगा। पूछने का भी सवाल नहीं कि कैसे होंगी। अनेक बार राजधानी स्थापन हुई है। सारा प्रश्न छोड़ पुरुषार्थ करना होता है याद की यात्राकी। जिससे ही सतोप्रधान पवित्र बन जावेंगे। यह भी बच्चे जानते हैं कि इस समय तक जो बीता फिर वही रिपीट होना है। आत्मा में सारा पार्ट भरा हुआ है। जो फिर सा० होता है। आत्मा में रकार्ड भरा हुआ है सो फिर रिपीट होता है। ड्रामा पर भी अच्छी रीत ध्यान देना है। इसमें प्रश्न पूछने की भी दरकार नहीं। जो रिकार्ड भरा हुआ है वह बोलना ही है। आप ही बताता रहता हूं। इसमें कोई फर्क नहीं पड़ सकता। 84 जन्म पार्ट बजाया है एक एक ने। कल्पपहले जैसे पढ़ा था वैसे ही पढ़ाते हैं इसमें प्रश्न उठने की कोई दरकार ही नहीं। मुंझने की भी दरकार नहीं। भूल बात है पावन बनने की। कहते हैं हम पतितों को पावन बनाऊं पावन दुनिया में इन्हों का राज्य था। सो फिर जरूर होगा। इसलिए तुमको राजयोग सिखलाते हैं। बाप श्रीमत देते हैं। इसमें बड़ी रिफाईननेस है। आत्मा रिफाईन बन जाती है तो शरीर भी रिफाईन। तुम राज्य भी रिफाईन करते हो। इसलिए उनका नाम ही स्वर्ग हेविन है। सह नालेज सभी नालेज सेबेस्ट है। और मोस्ट इजी है। बाप कहते हैं मेरी मत पर चलो तो गेरन्टी करता हूं विकर्म विनाश होंगे। और यह ल०ना० भी बनेंगे। कहते भी हैं सभी कि हम ल०ना० बनेंगे। है ही सत्यनारायण की कथा। अमर कथा अमरपुरी का तुम मालिक बनते हो। तुम बच्चों को अभी ज्ञाननेत्र है। बाकी स्टुडन्ट नम्बरवार पढ़ते हैं। पुरुषार्थ तो जरूर करते हैं। परन्तु कोई कैसे कोई कैसे हैं। सभीआत्माओं का पार्ट का रिकार्ड भरा हुआ है। जरा भी चेंज नहीं हो सकता। इसलिए बाबा कहते है यह भी बहुत गुह्य ज्ञान है। कुदरत है। फिर यह ज्ञान नई दुनिया में प्रायः लोप हो जाता है। तुम संस्कार ले जाते हो राजयोग की। इसलिए तुम जितना याद में रह आप समान बनाते हो उतना ऊंच जन्म। जो बच्चे जल्दी गये हैं सो कर्मातीत अवस्था में नहीं गये क्यों कि योग में कमी थी। भल अन्यन्य बच्चे जाते हैं, क्यों गये, योग की कमी ड्रामा में थी। हो सकता है आत्मा में संस्कार तो है। एक तो जन्म अच्छा और फिर आत्मा में संस्कार गई। तो आत्मा की एक्टिविटी ऊंच होंगी। जहां भी जावेंगे प्रभाव रहता है। शक्ति भी रहती है ज्ञान और योग की। अभी तो बच्चे जानते हैं हमारा अभी सुखी जीवन बनता है। दुःखी जीवन खत्म हो जाता है। यह भी तुम बनते हो और पुरुषार्थ कर रहे हो। बगीचे को पानी मिलता है तुमको भी पानी मिलता है। बाप भी देते हैं बच्चों को बच्चे बच्चे को भी देते हैं। अक्षर भी अच्छे हैं। नज़र नज़र

से मिलती है। इसलिए बाबा कहते हैं आंखें बन्द नहीं करनी चाहिए। झुटका खाते हैं या अनेकों को याद करते हैं मित्र सम्बन्धियों आद अनेकों को याद करते हैं। गायन है नज़र से निहाल ... वह सभी को निहाल कर देते हैं। सभी की सदगति देते हैं। एक्टिविटी चलती है ना। जो फिर गाई जाती है। बाप बहुत प्यारा है। इन से ऊंच कोई है नहीं। यह भी बच्चे जानते हैं बाप हरको कल्प2 मिलता है। बेहद का सन्यास कराते हैं। और कोई करा न सके। न किसको पता है बेहद का सन्यास कैसे होता है। तुम बच्चे जानते हो शरीर छोड़ कर अपने घर जाना है पुरानी दुनिया की वस्तु कोई भी याद न आये। मेहनत है ना। देह सहित देह के सभी सम्बन्ध को भूलना है। अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। यह सबजेक्ट है तीखी। आजकल बाबा इस पर जोर लगा रहे हैं। फिर बुधि में नाम रूप नहीं आवेगा। बाप ही याद आवेगा। मेहनत से अवस्था को जमाना है। विचार सागर मथन करना है। कोई बात समझ में न आये तो पूछ सकते हैं। बराबर पतित-पावन सर्वशक्तिवान भी कहा जाता है। उनकी बैटरी सदैव ही चार्ज है। तुम्हारी डिसचार्ज हो जाती है। अभी बुधि का योग लगाने से ही बैटरी चार्ज होनी है। उठते-बैठते, खाते-पीते जैसे बाबा आशुक माशुक का मिशाल देते हैं नेक्स्ट में आशुक माशुक वह है, थर्ड में आशुक माशुक होते है विकार के लिए। संगम पर ही सर्व की सदगति गाई हुई है। इन बातों में मुझने की दरकार नहीं। मनुष्य समझते हैं परम परा से भक्ति चली आती है। बच्चे समझते हैं एक्चुएट कबसे भक्ति शुरु हुई है। बाप कहते हैं इस रथ को साधारण देख कोई बिला ही निश्चय बुधि होती है। गाया जाता है ब्रहमा द्वारा स्थापना। राजधानी एक तो नहीं स्थापन करेंगे। एक डायरेक्शन देते हैं। प्रजापिता भी गाया हुआ है। ब्राहमण बच्चे सभी हैं एडाप्टेड। देवतायें होते हैं सतयुग में योग बल से। वहां रावण होता ही नहीं। रिसी2 पायन्ट्स धारण करनी है तो समय पर सुनासके। वहां रावण ही नहीं। बाप है सर्वशक्तिवान उन से योग लगाने से हम इसयोगबल से विश्व का मालिक बनते हैं। बाहूंबल से विनाश होता है। योगबल से स्थापना होती है। जिसमानी बल और रूहानी बल में कितना फर्क है। वह तो जिसमानी बल चला आ रहा है यह योगबल अभी से ही मिलता है। यह है याद और पढ़ाई दोनों में ध्यान चाहिए। याद भी चाहिए। नालेज भी रोज चाहिए। प्रबन्ध भी सभी मिलती है योगबल से तुम सब विश्व का पवित्र बनते बनाते हो। तो यह भोजन आद क्या बड़ी बात है। मुख्य बात है पावन बनने की। जानते हो नई दुनिया सतोप्रधान थी। फिर रिपीट होगी तो जरूर सतोप्रधान बनना पड़े। बाबा तो सतोप्रधान बनने की युक्ति एक्चुएट और कल्प2 बताते हैं। मुखभी चाहिए ना। गऊमुख गाया हुआ है। बराबर गऊ श्री है। इन द्वारा बहुतों को एडाप्ट करते हैं। तो गऊ (माता) हुई ना। हंसी में कहते हैं मैं ने कितने एडाप्ट किये हैं। जगत की अम्बा किसको कहेंगे। वह जिसका पिता यह आत्माओं का पिता। बाकी अम्बा चाहिए। अम्बा के पास तो बहुत हो जाते हैं। समझते जरा भी नहीं कि आखिरीन में अम्बा है कौन। मंदिर तो बहुत बड़े2 हैं। अम्बा2 जो कहते हैं जरूर बेहद की अम्बा होगी। बेहद की अम्बा से बेहद की बादशाही मिलती है। फिर महाराजा महारानी बनते हैं। वर्ष2 उनसे पैसा मांगते हो। वहां राज-राजेश्वरी बनती हैं। कोमन है। इस समय जानते हो हम मम्मा बाबा हैं। फिर श्री ल०ना० के साथ होंगे। यहां तुमको रत्न मिलती है। जास्ती वैल्यू इन रत्नों की है जो कोई कथन कर न सके। बाप रूप भी है ज्ञान को बरसात भी करते हैं। आधा कल्प भक्ति अज्ञान। आधा कल्प ज्ञान। अभी सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त के राज़ को तुम बच्चे ही जानते हो। तो कितना अच्छी रीत बच्चों को पढ़ना चाहिए। यहां सम्मुख रहकर रिफ्रेश होते होते हो। फील करते हो हम बाबा के गोद में बैठे हैं। बाबा पढ़ा रहे हैं। पाण्डव सेना का मार्शल भी है। सभी आत्माओं को साथ ले जाते हैं। यह है शिव की बारात। भाईयों को बरसात बाप के पिछाड़ी। अच्छा मीठे2 रूहानी सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।